तत्पुरुष समास Contd.

B.A.-I S/W
UMA PATHAK
Deptt. of Skt.

950 ऊर्यादिच्विडाचश्च - १।४।६१

यह संज्ञा सूत्र है। ऊर्यादि गण है, जिसमें ऊर्या, उररी आदि का ग्रहण होता है। 'च्वि' एवं 'डाच्' आदि प्रत्यय हैं। सूत्र का अर्थ है- यदि ऊर्यादि गण में आनेवाले शब्द के बाद 'च्वि' या 'डाच्' प्रत्यय होता है तो वे गति संज्ञक होते हैं। यथा - ऊरीकृत्य - लौ० वि० - ऊरी कृत्वा, अ० वि० - ऊरी + कृ + क्त्वा।

'ऊर्यादिच्विडाचश्च' सूत्रानुसार 'ऊरी' पद के साथ क्त्वा प्रत्ययान्त कृत्वा का समास हुआ। 'ऊरी' शब्द के गति-संज्ञक होने के कारण 'कुगतिप्रादयः' से यह गतिसंज्ञक माना गया। कृ० : से प्राति०, सुपो... से विभक्ति का लोप, 'प्रथमा...' से उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' से पूर्वनिपात, ऊरी + कृ, 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' से क्त्वा का ल्यप् आदेश होने के बाद, 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' से 'त्' का आगम होकर ऊरी + कृ + त् + य + स्वादि कार्य होकर ऊरीकृत्यः रूप सिद्ध हुआ।

(b) शुक्लीकृत्य - लौ० वि० - अशुक्लं शुक्लं कृत्वा, अ० वि० - शुक्ल + कृ + क्त्वा। same as ऊरीकृत्यः।

(c) सुपुरुषः - लौ० वि० - शोभनः पुरुषः - शोभन + सु, पुरुष + सु। कुगतिप्रादयः.. से समास, प्राति०, विभक्ति लोप, उपसर्जन संज्ञा, पूर्वनिपात, सु के पूर्व प्रयोग होने पर सु + पुरुष, स्वादि कार्य होकर सुपुरुषः रूप सिद्ध हुआ।

(d) प्राचार्यः - प्रगतः आचार्यः (लौ० वि०), अ० वि० - प्र + आचार्य + सु। वार्तिकानुसार प्र (गत अर्थ में) 'प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया' का आचार्य के साथ समास हुआ। 'कृत्त..', सुपो...' 'प्रथमा..', उपसर्जनं पूर्वम् - प्र + आचार्य, 'अकः सवर्णे दीर्घः' से दीर्घ संधि होकर प्राचार्य + सु = प्राचार्यः रूप सिद्ध हुआ।

'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया' - 'अति' आदि का क्रान्त आदि अर्थ में द्वितीयान्त सुबन्त के साथ समास होता है।

वा० - अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया

Scanned with CamScanner

यथा - अतिमालम् - लौ० वि० - अतिक्रान्तो मालाम् - अ० वि० -
अति + माला + अम् ।

951. एकविभक्ति चापूर्वनिपाते - 1/2/44
यह संज्ञा सूत्र है। सूत्र का अर्थ है - जिस विग्रह वाक्य में एक ही विभक्ति होती है तो उसकी उपसर्जन संज्ञा तो होती है, किन्तु पूर्वनिपात नहीं होता।

952. गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य - सूत्र का अर्थ है उपसर्जन संज्ञक 'गो' शब्द एवं स्त्रीसंज्ञक प्रत्यय से अन्त होने वाले पदों का ह्रस्व हो जाता है।

वा० - अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया - अव आदि का 'क्रुष्ट' आदि के अर्थ में तृतीया से अन्त होनेवाले सुबन्त के साथ समास होता है। यथा - अवकोकिलः - लौ० वि० - अवक्रुष्टः कोकिलया, अ० वि० - अवक्रुष्ट + सु + कोकिल + टा ।

वा० - पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या - यदि ग्लानि आदि अर्थ हो तो 'परि' आदि का चतुर्थी विभक्ति से अन्त होनेवाले सुबन्त के साथ समास होता है। यथा - पर्यध्ययनः - लौ० वि० - परिग्लानोऽध्ययनाय - परिग्लान + सु + अध्ययन +

वा० - निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या निर् आदि उपसर्गों को पञ्चम्यन्त पद के साथ तत्पुरुष समास होता है।
यथा - निष्कौशाम्बिः - निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः (लौ० वि०), अ० वि० - निर् + कौशाम्बी + ङसि ।

निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या' इस वार्तिक से निष्क्रान्त अर्थ में विद्यमान 'निर्' का पञ्चम्यन्त 'कौशाम्बी' के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित..' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातु..' से विभक्ति का लोप, 'प्रथमा..' से उपसर्जन संज्ञा 'उपसर्जनं..' से पूर्व निपात, - निर् कौशाम्बी, 'गोस्त्रियो-रुपसर्जनस्य' से उपसर्जन संज्ञक की ह्रस्व संज्ञा - निर् + कौशाम्बि, 'इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य' से विसर्ग का 'ष्' तथा स्वादि कार्य होकर - निष्कौशाम्बिः रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner